

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2006-07-08
Regn. No.: DELHIN/2000/2473

शिवोपासना
चिकित्सा
मसाज-धीरेपी
एरुद्रोपासना
हाडहाधीरेपी
मृदुधीरेपी
नेचरोपैथी
बोगासन
ध्यान

**एम. एस. आर. नेचरोपैथी,
योगा एवं आयुर्वेदिक हॉस्पिटल**

जैन मंदिर आश्रम, रिंग रोड,
सराय काले खौं पेट्रोल पम्प के पीछे, नई दिल्ली - 110 013
फोन - 011-26327911, 9213373656

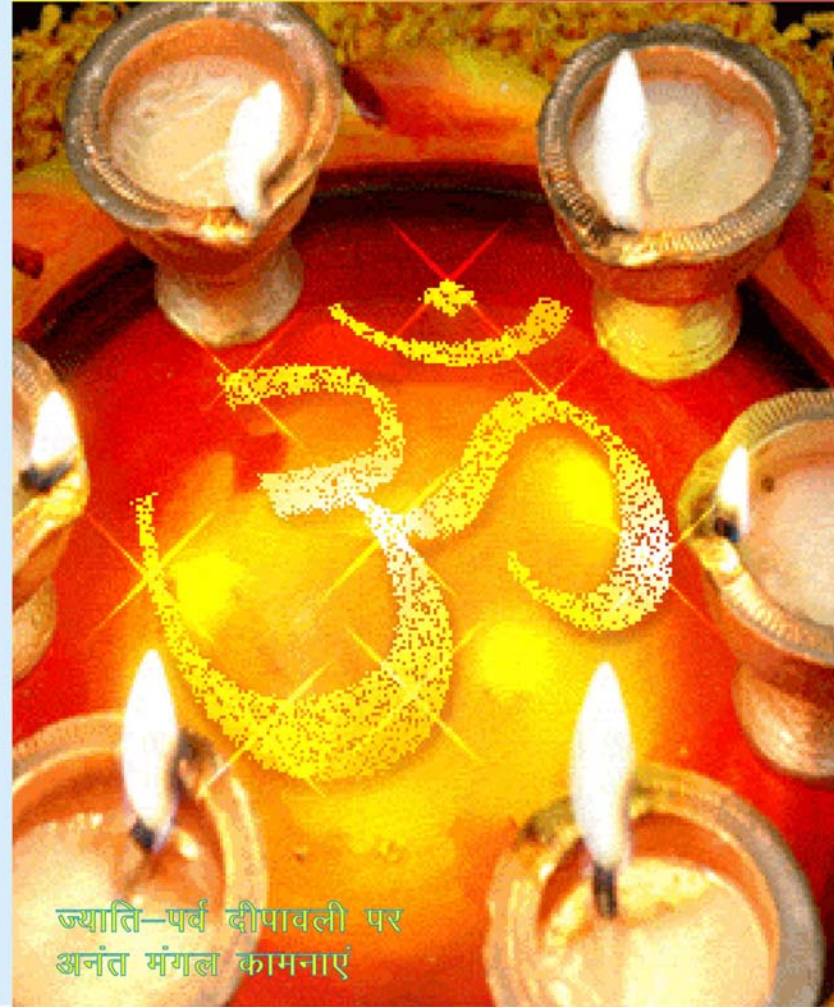
प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम,
सराय काले खौं के सामने रिंग रोड, पो. बो.-3240, नई दिल्ली-13, आई. जी. प्रिन्टर्स
104 (DSIDC) ओखला फेस-1 से मुद्रित। संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

अक्टूबर, 2006

मूल्य 5.00 रुपये

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका



ज्याति-पर्व दीपावली पर
अनंत मंगल कामनाएं

न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्त वग्गा, न सुया, न बंधवा,
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तार मेवं अणुजाइ कम्मं।

प्राणी के दुःख को न ज्ञातिजन बंटा सकते हैं। न मित्र जन उसके दुःख को कम कर सकते हैं न ही पुत्र और बांधव उसके दुःख कमकर सकते हैं। जीव को अकेले को ही दुःख भोगना पड़ता है क्योंकि कर्म कर्त्ता का ही अनुगमन करता है।

○ महावीर वाणी

अनुभवी की सलाह

कहते हैं कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने आदमी की हरकतों से परेशान होकर देवताओं को एकत्रित किया और कहा, “आदमी को बनाकर मैं बहुत मुसीबत में पड़ गया हूँ, क्योंकि यह आदमी हर क्षण मेरे सामने शिकायतें करता रहता है। अब मैं न सो सकता हूँ, न शांति से बैठ सकता हूँ। इसलिए अब मैं कहीं गुप्त स्थान पर जाना चाहता हूँ, जहाँ आदमी पहुंच न सके।”

ब्रह्मा की भावनाओं का समादर करते हुए एक देव ने निवेदन किया, ‘आप हिमालय पर गौरी शंकर की चोटी पर बैठ जाये।’

ब्रह्मा ने कुछ सोचकर कहा, “अरे! तेनसिंह तथा हिलेरी आदि अनेक व्यक्ति वहाँ पर पहुंच चुके हैं।”

किसी ने बताया, “प्रशांत महासागर में पांच मील नीचे गहराई में छिप जाइये।”

ब्रह्मा बोले, “वैज्ञानिक आज कहां नहीं पहुंच रहे हैं।”

कोई बोला, “चांद तारों पर बैठ जाइये।”

ब्रह्मा ने कहा, “ वहां तो आदमी पहुंच भी चुके है।”

एक बूढ़े देवता ने कान में कहा, ‘आप आदमी के अंदर बैठ जाइये।’

ब्रह्मा ने अनुभवी की सलाह को मानते हुए आदमी के अंदर बैठने का निर्णय ले लिया।

उस दिन से आदमी भगवान को शिकायत करने के लिए स्वर्ग से पाताल तक, इस छोर से उस छोर तक खोजता फिर रहा है। परंतु अपने अंदर की ओर कभी झांकता तक नहीं है।

रोशनी का त्यौहार है दीवाली

हर त्यौहार के पीछे कोई न कोई विशेष प्रयोजन होता है। दीवाली पूरे हिन्दुस्तान का पर्व है। इसको बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। कुछ लोग भगवान महावीर के परिनिर्वाण के साथ इस पर्व को जोड़ते हैं। उनका मानना है कि कार्तिक कृष्णा अमावस्या की रात भगवान महावीर धर्म देशना देते देते परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए। उसी समय देवताओं ने जगमग ज्योति से रोशनी करके सब को सूचना दी थी कि भगवान महावीर अपने लक्ष्य को प्राप्त हो गए हैं। सिद्ध होकर शाश्वत सुखों में विराजमान हैं। बहुत से लोग धन की देवी लक्ष्मी का त्यौहार भी इसी को मानते है। आज लोग इसको श्री राम से जुड़ा हुआ त्यौहार मानते हैं। लंका युद्ध में राजा रावण से विजय प्राप्त करने के बाद जब अयोध्या प्रवेश किया तब श्री राम की असत्य पर सत्य की विजय के उपलक्ष्य में अयोध्या वासी लोगों ने खुशी मनाई तथा घर-घर पूरे शहर में जगमग दीप जलाए। इस रोशनी के त्यौहार के साथ पौराणिक अनेकानेक घटनाएं जुड़ी हुई हैं। रावण जैसे शक्तिशाली समृद्ध साधन सम्पन्न तथा सामदाम दंड भेदनीति में निपुण राजा को श्रीराम जैसे बनवास भोगतेसरल और निश्छल राजा ने हराया। इसके पीछे एक ही कारण था राम की की न्याय प्रियता, सत्य के लिए संघर्ष या यों कहना चाहिए कि यह राम की विजय नहीं, अनाचार और असत्य पर सदाचार और सत्य की विजय थी। श्रीराम तो इतने सीधे थे कि एक बार बनवास के समय सरोवर में एक बगुला धीरे-धीरे सावधानी से पैर रखकर चल रहा था। तब श्री राम ने लक्ष्मण को संबोधित करते हुए कहा—‘**पश्य लक्ष्मण पंपाया, वकः परम धार्मिक, मंदं मंदं पदं धत्ते, जीवानां वधशंकया**’।।

हे लक्ष्मण देख इस पंपा सरोवर के बगुले भी कितने धार्मिक हैं जो बड़ी सावधानी से चल रहे हैं, कि कहीं मेरे पैर धरने से किसी जीव की हत्या न हो जाए। तब लक्ष्मण ने कहा पूज्य भातृवर आप जैसे सरल आत्मा बगुले की चालाकी कैसे समझेंगे। बगुले की चालाकी के बारे में यह मछली बता रही है—

**वकः किं वर्ण्यते रामः येनाहं निष्कुली कृता,
सहचारी विजानीयात् चरित्रं सह चारिणां।।**

हे राम सहचारी के स्वभाव को सहचारी ही जान सकता है। हम जानते हैं बगुले की धूर्तता जिसने हमारे कुल को भी खत्म कर दिया। इतने सीधे राम, रावण के छल कपट को कैसे समझते। पर श्री राम की न्यायशीलता सत्यवादिता, और परोपकारिता ने उन्हें विजयी बना दिया। इसी खुशी में दीवाली और दशहरा मनाया जाता है।

○ निर्मला पुगलिया

समझना है मंत्रों की सार्थकता को



मैं उस वर्ष उत्तर प्रदेश की पदयात्रा पर था। अलीगढ़ की बात है। एक भगत जी मेरे पास आए। चेहरे पर गहरे आध्यात्मिकता के भाव स्वयं झलकते थे। उन्होंने कहा—मैं अकेले में आपसे कुछ परामर्श करना चाहता हूँ। मैंने कहा—कहिए, क्या बात है?

बात का प्रारंभ करते हुए उन्होंने कहा—पिछले कुछ वर्षों से जप योग का साधन चल रहा है। किन्तु अभी कुछ समय से बड़ी असमंजसता में से गुजर रहा हूँ।

क्या कारण है असमंजसता का ? मैंने पूछा। बोले—कुछ वर्ष पहले एक स्वामी जी मेरे घर पर ठहरे थे। मैंने उनसे ध्यान—विधि के बारे में जिज्ञासा प्रकट की। उन्होंने गुरु मंत्र प्रदान करते हुए मुझे कहा, दोनों आंखों के मध्य, भृकुटि पर अपने गुरु का ध्यान करो। जिस दिन भृकुटी के स्थान पर गुरु का चित्र स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आ जाए, तुम्हारा मंत्र सिद्ध हो जाएगा।

मेरा जप नियमित रूप से लंबे समय तक चलता रहा। अब गुरु का चित्र भी ललाट के मध्य भाग पर थोड़ा—थोड़ा उभरने लगा था। तभी एक—दूसरे स्वामी जी का घर पर आना हुआ। उन्होंने मेरी ध्यान विधि में संशोधन करते हुए बताया कि ललाट के मध्य भाग पर चित्र गुरु का नहीं भगवान का उभरना चाहिए। गुरु देहधारी है। अभी वे साधना—अवस्था में हैं। वे राग—द्वेष के बंधनों से सर्वथा मुक्त नहीं हैं। भगवान विदेह है, सिद्ध है, वीतराग हैं। इसलिए ध्यान भगवान का ही होना चाहिए। चित्र भगवान का ही उभरना चाहिए। श्री कृष्ण भगवान हैं। अतः तुम्हें अपने भृकुटि—स्थान पर भगवान कृष्ण का ही ध्यान करना चाहिए। जिस दिन भगवान कृष्ण का चित्र ललाट के मध्य भाग पर उभर कर आ जाएगा, तुम्हारा मंत्र सिद्ध हो जाएगा।

स्वामी जी का कथन मुझे ठीक लगा। तर्क—संगत भी था। मैंने गुरु के चित्र के स्थान पर भगवान कृष्ण के चित्र का ध्यान शुरू कर दिया। थोड़े ही अभ्यास के बाद भगवान का चित्र भी उभरने लगा। अब स्थिति यह है, मैं जब भी ध्यान करने बैठता हूँ कभी गुरुदेव का चित्र सामने उभरने लगता है और कभी भगवान का। मेरी असमंजसता यह है कि ध्यान के समय चित्र किनका सामने आना चाहिए। गुरुदेव का या भगवान का ? गुरुदेव ने मुझे मंत्र दिया, इस दृष्टि से जब मैं सोचता हूँ तब लगता है चित्र गुरुदेव का ही सामने आना चाहिए किन्तु

भगवान शुद्ध, बुद्ध, ज्योतिर्मय और चिन्मय है। इस दृष्टि से ध्यान तो भगवान का ही होना चाहिए। अब आप ही बताएं किस चित्र का उभरकर आना श्रेष्ठ होगा। भगवान कृष्ण का चित्र या पूज्य गुरुदेव का।

मंत्र के नाम पर श्रद्धा का शोषण

भगतजी के भोले—भाले प्रश्न पर मुझे मन ही मन हंसी आई। मैं उनके सहज जिज्ञासु स्वभाव पर मुग्ध भी था। उस सहज—सरल समर्पित चित्त का शोषण जिस तरह से किया गया था, उससे मन में कष्ट भी था। यदि मेरे मन में किसी प्रकार का साम्प्रदायिक अभिनिवेश या परंपरागत आग्रह होता, तो उन स्वामी जी की तरह मैं भी उस निश्चल समर्पण—प्रधान चित्त का शोषण कर सकता था। उसका ध्यान भगवान कृष्ण से हटाकर भगवान महावीर पर केन्द्रित कर सकता था। कह सकता था हटाओं ध्यान कृष्ण से अथवा इन भगवांधारी स्वामियों से। इनसे उम्र भर भी कुछ नहीं होने वाला है। इनके स्थान पर तुम ध्यान लगाओ महावीर पर, पार्श्वनाथ पर, अन्य जैन तीर्थंकरों पर, श्वेत वस्त्रधारी जैन मुनियों पर। तभी तुम्हारा ध्यान सफल होगा। किन्तु मेरे सत्यनिष्ठ मन ने न कभी इस भाषा में सोचा है और न ही इन पवित्र साधनों का साम्प्रदायिक परिवेश में इस्तेमाल उचित ही समझा है।

मैंने उनकी मानसिक असमंजसता को सुलझाते हुए कहा—आप इनकी चिंता ही छोड़ दीजिए कि यह चित्र या वह चित्र आज्ञा—चक्र पर उभरना चाहिए जो भी चित्र गुरुदेव का उभर रहा है अथवा भगवान का। प्रयत्न भी छोड़ दें कि यह चित्र उभरता है, गुरुदेव का या भगवान का, आप उसके द्रष्टा बन जाएं। केवल देखते रहें उस चित्र को, किसी भी उपेक्षा या अपेक्षा के बिना।

किन्तु मंत्र—सिद्ध किस चित्र के प्रकट होने से होगा ? उन्होंने उदग्र—व्यग्र मन से पूछा। मंत्र—सिद्ध तब होगा, मैंने कहा, जब सारे चित्र विलीन हो जाएंगे, कोई भी चित्र दिखाई नहीं देगा। चाहे गुरु का चित्र हो, चाहे भगवान का चित्र हो, चाहे और किसी का चित्र हो, जब तक हमारा मन चित्रों में रमा है, हम वास्तविकता को कैसे पा सकते हैं ? रूप—आकार के पार गए बिना मंत्र सिद्ध कैसे हो सकता है।

जप है मन की खुराक

उनके चेहरे पर उभरी रेखाएं रूपष्ट बता रही थीं कि उनके मन की उलझन और बढ़ गई है। मैंने विस्तार से समझाते हुए कहा—हम अपने मन को

एकग्र करने के लिए किसी शब्द मंत्र अथवा रूप-आकार का सहारा लेते हैं। जप और रूप मन की खुराक है। इनके बिना मन जिन्दा नहीं रह सकता। जैसे पानी के बिना मछली का जिन्दा रहना असंभव है, वैसे ही नाम और रूप मन के अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं। नाम और रूप की दुनिया में यह मन भटकता रहता है। परमात्मा अनाम है, अरूप है। अब नाम और रूप में भटकने वाला मन अनाम और अरूप का अनुभव कैसे करे ?

इसके लिए गुरु साधक को कोई एक शब्द, कोई एक मंत्र, कोई एक रूप या आकार का आलंबन देते हैं। ताकि नाम और रूप के जगत में चारों ओर भटकता हुआ मन किसी एक नाम या रूप पर स्थिर हो जाए। यह नाम या रूप ऐसा हो जिस पर हमारी गहरी आस्था हो, जिसका अपना जीवन भी ध्यान-समाधि का अनुभव लिए हुए हो। तभी हमारा मन उन नाम और रूप पर टिक सकेगा।

किन्तु यह नाम और रूप हमारा लक्ष्य नहीं है। हमें उन पर ही ठहर नहीं जाना है। अनेक से हटाकर मन को एक पर लगाना है, फिर एक से भी हटाकर अनाम में छलांग लगाना है। शब्द आखिर शब्द है, फिर चाहे वह गुरु का हो, भगवान का हो अथवा किसी देवता-विशेष से जुड़ा कोई मंत्र हो। रूप आखिर रूप है, फिर चाहे वह गुरु का हो अथवा भगवान का हो। शब्द, अशब्द का अनुभव तो नहीं दे सकता।

ध्यान का उद्देश्य है अशब्द, अनाम और अरूप चेतना का साक्षात्कार करना। जब हम जप या ध्यान करते हैं, तब ध्येय, ध्याता और ध्यान तीनों रहते हैं। ध्येय, जिस पर ध्यान किया जाय, ध्यान जो किया जाता है और ध्याता जो ध्यान करने वाला है। साधना के प्रारंभ में ये तीनों उपस्थित रहते हैं। साधक ज्यों-ज्यों गहराई में उतरना है, यह तीन का भेद समाप्त हो जाता है। फिर एक समय ऐसा आता है, जब यह भेद सम्पूर्णतः विलय हो जाता है। वही क्षण आत्मानुभूति का क्षण है, वहीं क्षण मंत्र-सिद्धि का क्षण है, वही क्षण समाधि का क्षण है। उसी आत्म साक्षात्कार के क्षण में द्वैत का कोई स्थान नहीं है।

जिस क्षण न आप होंगे, न मंत्र होगा, न किसी का भी कोई रूप या चित्र होगा, उस दिन आपका जप ओर ध्यान सिद्ध हो जाएगा। उससे पहले कोई भी चित्र उभरता है, उभरने दीजिए। कोई चित्र नहीं उभरतो है, उसके लिए कोई प्रयत्न मत कीजिए। महत्व चित्र का नहीं, द्रष्टा भाव का है, उस लयात्मक स्थिति

का है। भगत जी के चेहरे पर अब एक गहरे संतोष को स्पष्टतया पढ़ा जा सकता था।

पवित्र साधनों का गलत उपयोग

धर्म-जगत की यह त्रासदी ही रही है कि इसके पवित्र साधनों का उपयोग सदा अपवित्र उद्देश्यों के लिए ही होता रहा है। जिन पवित्र साधनों को आत्मा-परमात्मा के अनुभव पाने के लिए ईजाद किया गया था, वे आज अपने अहं-पोषण अथवा संप्रदाय पोषण में इस्तेमाल किए जा रहे हैं। मंत्र और मूर्ति ध्यान के आलंबन रूप में प्रमुखतः स्वीकार किए गए थे। कालांतर में वे उद्देश्य से भटक गये। स्वार्थपरस्त पंडितों-पुजारियों और धर्माधिकारियों द्वारा वे सांप्रदायिक अभिनिवेश के साधन बन गये। जबकि गुरु के चित्र से ध्यान हटाकर भगवान के चित्र पर ध्यान लगाने की बात अपने में ध्यान परक कोई मूल्य नहीं रखती। संप्रदायकपरक मूल्य तो स्पष्टतः प्रकट है ही। इस प्रकार के साम्प्रदायिक आग्रहों ने न केवल साधना-समर्पित साधकों का शोषण किया है, बल्कि ध्यान की चिन्मय विरासत को गहरा धक्का भी पहुंचाया है।

मैंने सुना है एक बार एक महात्मा जी एक भगत के घर पर ठहरे। स्वामीजी अद्वैत परंपरा के अनुयायी थे। उन्होंने भगत को सोहं मंत्र जाप के लिए दिया। कुछ समय बाद एक और स्वामीजी का आगमन भगत के घर पर हुआ। उन्होंने भगत से जाप किए जा रहे मंत्र के बारे में पूछा। भगत ने बताया सोहं। 'सोहं' सुनते ही स्वामीजी का चेहरा गंभीर हो गया।

बेचारा भगत सकपका गया। पूछा, महात्मन्! मंत्र जाप में कहीं भूल तो नहीं हो रही है ? स्वामी जी उसी गंभीर मुद्रा में चतुराई से बोले-वैसे सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। मंत्र के उच्चारण में थोड़ी-सी भूल हो रही है। मंत्र सोहं नहीं, दासोहं है। सोहं के पीछे केवल एक अक्षर 'दा' और जोड़ दो। सब कुछ बिल्कुल शुद्ध हो जाएगा।

धर्म भीरू भगत ने महात्माजी का बड़ा अनुग्रह माना। उसे क्या पता था कि 'सोहं' से 'दासोहं' परआते ही वह एक नई परंपरा में दीक्षित हो गया है। 'सोहं' यानि वह परमात्मा मैं हूँ, यह अद्वैत का संसूचन करता है। 'दासोहं' यानि मैं उस परमात्मा का दास हूँ, द्वैत-परंपरा का समर्थन करता है। दूसरे स्वामीजी द्वैत के समर्थक जो थे।

अब भगत 'दासोहं' का जप करने लगा। संयोग वश कुछ महीनों बाद पहले



स्वामी जी का फिर आगमन हो गया। उन्होंने मंत्र—उपासना के बारे में जानकारी लेनी चाही। भगत ने निश्चल मन से सब कुछ बता दिया। यह सुनकर इन स्वामी जी के माथे पर रेखाएं खिंच आईं। भगत ने समझा, लगता है मंत्र—जाप में फिर कुछ गलती हो रही है। उसने महात्माजी से मार्ग—दर्शन चाहा। महात्माजी ने 'दासोहं' के पीछे एक 'सकार' और जोड़ने का परामर्श दिया।

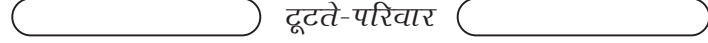
अब मंत्र बन गया 'सदासोहं' नित्य वह 'परमात्मा' मैं हूँ, नित्य वह मैं हूँ। मैं उसका दास नहीं हूँ। मैं खुद वही हूँ। वह मेरा मालिक नहीं, लेकिन मैं स्वयं वही हूँ। अब वह भगत द्वैत से फिर अद्वैत में दाखिल हो गया था।

कुछ समय बीता। फिर वे दूसरे स्वामी घूमते-घूमते आ गए। सारी स्थिति को जानकर उन्होंने सुझाव दिया 'सदासोहं' के पीछे एक 'दाकार' और लगाओ। अब मंत्र बन गया था 'दास-दासोहं' मैं तो उस भगवान के दास का भी दास हूँ। अब भोला भगत् 'दास-दासोहम्' का जाप करने लगा। इसका अर्थ हुआ, वह अद्वैत से फिर द्वैत दर्शन में आ गया था।

मंत्र की सार्थकता को समझें

उस जगत की कथा का सिलसिला कभी समाप्त हुआ या नहीं, मैं नहीं जानता। इतना अवश्य जानता हूँ कि घर-घर में ये सिलसिला आज भी चल रहा है, घर-घर में यह कथा आज भी दुहराई जा रही है। अद्वैत और द्वैत के नाम पर, श्वेताम्बर और दिग्बर के नाम पर, अमूर्ति-पूजा और मूर्ति पूजा के नाम पर, धर्मभीरु भगतों की श्रद्धा के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। अपनी-अपनी परंपराओं और मान्यताओं को परिपुष्ट बनाने के लिए योग, ध्यान, मंत्र, देवता आदि सबके टुकड़े कर दिए गए हैं। सब पर अपनी-अपनी मुहर लगाकर दुकाने खोलकर लोग बैठ गए हैं और बेचारा भगत, सम्प्रदायों की सौदेबाजी में फंसकर रह गया है। वास्तविकता का पता उसे पूरी उम्र भी नहीं चल पाता है।

वास्तविकता क्या है ? इसे जानने के लिए हमें समझना होगा कि इन मंत्रों, रूपाकारों का कहां तक उपयोग है? ये मात्र निमित्त हैं, एक भूमिका तक पहुंचा सकते हैं और उसी भूमिका तक इनका उपयोग है। इनकी सार्थकता को समझना है तो कृतकृत्यता को भी समझना है। दोनों को समझकर ही हम इनसे लाभान्वित हो सकेंगे। अगर इनको ठीक से नहीं समझा गया तो ये ही हमारे जीवन पर भार बनकर रह जायेंगे, जिस भार को अंधी आंखों से और बेबस कंधों से ढोने के सिवा हमारे पास कोई चारा नहीं रह जाएगा।



रिशतों की विडम्बना

○ संघपवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री

निधि बिलखती—सी कमरे में घुसी और मालती से लिपटकर बोली—मम्मी दादी मां ने नाश्ते में मुझे तो रूखी—सूखी रोटी दी है, और सोनू—मोनू को दिए हैं दूध—भरे गिलास।

मालती ने निधि को प्यार से चूमते हुए कहा—बेटा! तेरे पापा अभी बीमार हैं। वे स्वस्थ होकर जब कमाने लगेंगे, तब तुम्हें भी दूध से भरा गिलास मिलेगा।

निधि चुपचाप सूखी रोटी चबाने लगी। मालती ने आंखों तक आए आसुओं के घूंट को होठों—ही होठों में पी लिया। इतने में सास ने आकर झिड़का। यहां बैठे—बैठे किसको रो रही हो ? ढेर सारे बर्तन पड़े हैं, अभी तक नहीं मले ?

सास की तीखी आवाज मालती के कोमल कलेजे को भीतर तक चीर गई। वह जानती है बात—बात में उसका इतना अपमान क्यों किया जाता है ? क्योंकि उसका पति निरंतर बीमार रहने के कारण कमा नहीं पाता है। पर इसमें उसका क्या कसूर, जो रात भर पति की सेवा में जागने पर भी दिन के हर काम के लिए उसे नौकरानी की तरह काम में लिया जाए। जब कि उसकी देवरानी अपने पति और बच्चों सहित बैठी टी.वी. देख रही है, फिर भी उसे बर्तन मलने को नहीं कहा जाता क्योंकि घर का खर्च देवर की कमाई पर जो चलता है।

मालती गुमसुम सी अपने में खो जाती हैं। वह भी एक धनवान बाप की बेटा है। अच्छी पढ़ी लिखी है, सुंदर तथा सुशील है। पिता के घर से दहेज भी लता देवरानी से ज्यादा ही लाई है। फिर भी उसे नौकरानी सा व्यवहार क्यों झेलना पड़ता है ? क्योंकि पति बचपन से ही बीमार रहते हैं, कमा नहीं पाते हैं। किन्तु इसमें उसका क्या दोष है। विचारों की इसी उधेड़बुन में वह खोई थी कि लता ने आकर उसे झकझोरा—यह क्या तरीका है, भाभी जी ? सूरज इतना चढ़ आया, सोनू—मोनू के स्कूल का समय होने वाला है, फिर भी अभी तक टिफिन तैयार नहीं हुए ?

तीर की तरह लता के शब्द मालती के दिल को चीर गए। उसका पौर—पौर चीख उठा। मन में आया कि लता की गर्दन पकड़कर कह दे कि मैं तेरे बाप की दी हुई दासी तो नहीं हूँ। तू क्यों इतना रौब झाड़ रही है। लेकिन अपने को संयत करते हुए दबी जबान में उसने इतना ही कहा—इतनी क्या जल्दी है लता ! स्कूल का समय होने में अभी देर है। अभी तो मैंने निधि को नहलाया भी नहीं है।

मैं नहीं जानती निधि—विधि को, लता ने मुंह चढ़ाते हुए कहा। नौ बजे तक सोनू—मोनू का टिफिन तैयार हो जाना चाहिए, लता अपने कमरे में घुस गई। अब जैसे मालती की सहन—शक्ति जबाब देने लगी। कमरे से आकर लता डांट जाए, इसकी यह औकात! क्या मैं भी इस घर की सदस्या नहीं हूँ? उसको सोनू—मोनू की चिंता है। क्या निधि भी इसी परिवार की बच्ची नहीं है। क्या लड़की होना ही अपराध है? बच्चे तो सब भगवान के रूप हैं। क्या लड़की, क्या लड़का, अपना अपना खून सबको प्यारा होता है। निधि को नहलाए बिना मैं टिफिन तैयार नहीं करूंगी। लता को जो करना हो कर ले। मालती ने मन—ही—मन निर्णय ले लिया। वह निधि को नहलाने बैठी। इतने में सास की कड़कती आवाज उसके कानों में पड़ी—सुनती ही नहीं हो, मालती? तेरा खसम कमाए तब इतना ढीठ बनना। अभी इतना ढीठ बनना ठीक नहीं। यह कहते—कहते सास ने झटका देकर नहलाती हुई निधि को खींच लिया। फिर बोली, जा पहले सोनू—मोनूका टिफिन तैयार कर। इस छोरी को अभी से क्यों इतना बिगाड़ रही हो। हम तो अपने बच्चों को एक—एक महीने तक भी नहीं नहलाते थे। अब मालती के भीतर दबा हुआ लावा फूट पड़ा। वह बोली—माताजी! वह जमाना और था। तब कौन टी.वी देखता था। कौन अपने बच्चों को टिफिन तैयार करके देता था। बस बस रहने दे। मैं जानती हूँ, तू लता और उसके बच्चों से जलती है। पर तेरी और लता की बराबरी ही क्या है? लता ने एक ही नहीं, दो—दो कुल दीपकों को जन्म दिया है। उसका पति हजारों रूपए मासिक कमाता है। है लता की और तुम्हारी बराबरी? सास ने झल्लाते हुए एक सांस में सब कुछ कह दिया। यह सुनते ही मालती भी बोल पड़ी—माता जी? कोई चाहे कैसा भी है। पर आपकी नजर में तो सारे बेटे, सारी बहुएं सब पोते पोतियां एक समान होने चाहिए। दाई और बाई आंख में क्या कभी फर्क किया जाता है? मालती को यों उत्तर—प्रयुत्तर करते देखकर सास का गुस्सा सातवें आसमान को छूने लगा। उसने आव देखा ना ताव, हाथ में चिमटा लेकर मालती की पीठ पर पूरी ताकत से जमा दिया। बेचारी मालती दो—चार क्षण तो दर्द के मारे चीख भी नहीं सकी। वह चोट से पूरी तरह संभल भी नहीं पाई थी कि सास ने धक्का देकर बाहर धकेलते हुए कहा—जा चुडैल, बाहर निकल जा। इस घर में तेरे लिए अब कोई स्थान नहीं है। मालती के लिए यह सब कुछ सर्वथा अकल्पित था। किन्तु सोचने, समझने के लिए वक्त भी कहां था। फिर अब घर में रहने का मतलब था उम्र भर नौकरानी से भी बदतर अपमानित जीवन जीना।

किन्तु बीमार पति और फूल सी मासूम लड़की को लेकर वह जाए भी तो कहां जाए। सास ने धन सम्पत्ति, जमीन—मकान का हिस्सा तो दिया ही नहीं, मालती को दहेज में मिला धन—जेवर भी हड़प लिया था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था वह करे तो क्या करे। पास में पैसा नहीं तो कोई भी अपना नहीं। कहावत भी है—“**पैसा पास तो दूनियां दास।**” पति बीमार है, कमा नहीं सकते, इसलिए मां भी बदल गई। उसका कोख जाया बेटा अब बेटा नहीं रहा। वह री स्वार्थमयी दुनियां, घृणा—मिश्रित हंसी उसके होठों पर उभर आई। पति ने जब यह सब जाना, तो जैसे उन्हें लकवा ही मार गया। वे निढाल होकर खाट पर गिर पड़े। उन्हें जल्दी से जल्दी उपचार देना जरूरी था। मालती में तभी अचानक, पता नहीं, कहां से शक्ति आ गई। उसने पति को अपने कंधों पर उठाया और चल पड़ी अस्पताल की ओर। निधि मम्मी की अंगुली पकड़े साथ—साथ चल रही थी। किन्तु दुर्भाग्य अभी पीछा कहां छोड़ रहा था। सड़क को पार करते समय निधि के हाथ से मां की अंगुली छूट गई। मालती सड़क के पार पहुंच गई, निधि रह गई बीच में। नादान बच्ची बिना आगे पीछे देखे, दौड़ पड़ी मम्मी की ओर। इधर तेज रफ्तार से आती बस अपने पहियों के नीचे बेहरमी से बच्ची को कुचलते हुए आगे बढ़ गई। बच्ची की चीख और लोगों का शोर सुनकर मालती ने पीछे मुड़कर देखा तो उसका कलेजा जैसे पूरी तरह बैठ गया। अब अपनी लाडली का शव ही उसके हाथों में था। किसी राहगीर ने जैसे—तैसे उनको अस्पताल तक पहुंचाया। किन्तु पैसे के अभाव में यहां भी उनकी सुनने वाला कौन था? अस्पताल के बरामदे में खून से लथपथ निधि और अंतिम सांसे गिनते पति के लिए मालती दिन भर डाक्टरों का इंतजार करती रही, जनरल वार्ड में पति के लिए जगह पाने के लिए दौड़ धूप करती रही, किन्तु सब कुछ व्यर्थ। न डाक्टर का हृदय पसीजा और न किसी वार्ड में जगह ही मिली। क्योंकि उसके पास न पैसा था और न ही किसी प्रभावशाली व्यक्ति की सिफारिश। फिर उसकी सुनता भी कौन? अचानक मालती के पति को जोर की हिचकी आई। देखते—देखते वे एक ओर लुढ़क गए। पति वियोग की व्यथा को भीतर दबाए, पत्थर दिल सी बनी वह छः हाथ कफन का जुगाड़ भी नहीं कर सकी। अपनी आधी साड़ी से ही उसने पति का शव ढकना चाहा कि अर्थलोलुप निर्मम समाज व्यवस्था से आहत वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। मूर्च्छित अवस्था में ही वह अर्धविक्षिप्त सी बड़बड़ाए जा रही थी—“**वाह रे धन-लोलुप भारतीय समाज वाह री अभागिन भारतीय नारी.....।**” किन्तु उसकी वेदना सुनने वाला वहां कोई नहीं था।

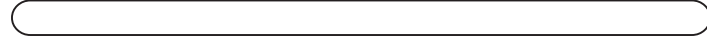
कौन बचाएगा धरती ?

○ प्रस्तुति-अरुण तिवारी

तेजी से बढ़ती आबादी, औद्योगीकरण और विलासितापूर्ण जीवनशैली ने धरती के पर्यावरण पर गंभीर चोट की है। सागर की गहराइयों से लेकर अंतरिक्ष की उंचाईयों तक ऐसा कुछ भी नहीं बचा, जिसके साथ मानव ने छेड़छाड़ न की हो। इसी का नतीजा है कि आज संपूर्ण मानव जाति गंभीर संकट में फंस गई है। पर्यावरण विशेषज्ञ बताते हैं कि आज धरती पर तमाम ऐसी गंभीर विपदाएं मंडरा रही हैं कि निकट भविष्य में प्रलयकारी दशाएं पनप सकती हैं। यदि ऐसा हुआ तो न तो यह हरी भरी धरती बचेगी और न ही इस पर निर्वाह करने वाले छह अरब से अधिक नर-नारी। दरअसल, धरती के पर्यावरण को बिगाड़ने का मुख्य दोष बढ़ती आबादी का ही है। आज से करीब डेढ़ करोड़ वर्ष पूर्व जब पृथ्वी पर मानव ने आंखे खोली तो चारों ओर सब कुछ हरा भरा था। संपूर्ण पर्यावरण कुदरत द्वारा रचे गए अपने मूल स्वरूप में था। कहीं भी मानव की कोई दखल अंदाजी नहीं थी। पर जैसे जैसे किसी एक कोने में बसे मुट्ठी भर मनु पुत्रों ने अपनी तादाद बढ़ाई, प्रकृति पर प्रहार होने लगे। पेट की आग बुझाने से लेकर सिर छिपाने और रहन सहन की जरूरतें पूरी करने के लिए मिट्टी वन पहाड़ आदि सभी का अंधाधुंध दोहन किया गया। आबादी बढ़ने के साथ दोहन का स्वरूप भी बदलकर मंद, सामान्य उग्र और फिर आक्रमणकारी हो गया।

पर्यावरण को झुलसाने वाली आग में घी डालने का काम किया 18वीं सदी की औद्योगिक क्रांति ने। औद्योगीकरण के साथ शहरीकरण पनपा और फिर देखते देखते दुनिया का चेहरा ही बदल गया। आधुनिकीकरण और अधिक से अधिक सुख-सुविधाएं जुटाने की होड़ ने मानव को असाधारण उर्जा भक्षी बना दिया। उर्जा की जरूरतें पूरी करने के लिए जीवाश्म ईंधनों जैसे कोयला पेट्रोलियम उत्पादों की खपत का ऐसा अंतहीन सिलसिला शुरू हुआ, जिसने आज विकराल रूप धारण कर मानव अस्तित्व को संकट में फंसा दिया है। दरअसल जीवाश्म ईंधनों के उपयोग से वायुमंडल में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ती है, जो अंततः खतरनाक ग्रीन हाउस प्रभाव को जन्म देती है। आंकड़े देखें तो पता लगता है कि सन् 1965 में वातावरण में कार्बनडाईआक्साइड की मात्रा 320 पीपीएम यानि 320 भाग प्रति दश लाख भाग थी। आज यह बढ़कर 380 पीपीएम के लगभग है।

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि सन् 2050 तक कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा लगभग दो गुणी हो जाएगी। ऊपरी वायुमंडल में कार्बनडाई आक्साइड की अधिक मात्रा एक कंबल सा बना देती है। जिससे धरती की कुदरती गर्माहट बाहरी वायुमंडल में नहीं जा पाती। नतीजतन धरती का पारा ऊपर चढ़ने लगता है। गणनाएं बताती हैं कि वातावरण कार्बनडाईआक्साइड की मात्रा दोगुनी होने से धरती का औसत तापमान एक से साढ़े तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ सकता है। पिछले 110 वर्षों के दौरान पनपे ग्रीनहाउस प्रभाव के कारण धरती के तापमान में 0.6 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि पहले ही दर्ज की जा चुकी है। इससे औसत समुद्र जल स्तर उपर उठने लगता है। तापमान में अब तक हुई बढ़ौतरी से सागरों का माथा 25 सेंटीमीटर ऊपर उठ चुका है। यदि सागरों का जल स्तर इसी तरह ऊपर उठता रहा तो धरती अंततः जल प्रलय का विनाशकारी दृश्य दिखाई देगा। इसका पहला कहर समुद्र तट के आस पास बसी आबादी पर बरपेगा, क्योंकि यह क्षेत्र जल मग्न हो जाएगा। पर्यावरण वैज्ञानिकों के अनुसार निकट भविष्य में मारीशस समेत कई द्वीपों के सागर में विलीन होने की संभावना बन गई है। बढ़ती आबादी के लिए सुख सुविधाएं जुटाने की होड़ ने धरती के रक्षा कवच को भारी चोट पहुंचाई है। यह कवच ओजोन गैस की मोटी परत के रूप में उपरी वायुमंडल में मौजूद है। इसी परत के लिए सूरज से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणें हम तक नहीं पहुंच पाती। वैज्ञानिकों ने बताया है कि इस परत में जगह-जगह छेद हो गए हैं और अंटार्कटिका के ऊपर विशाल विवर बन गया। इस कारण कुछ देशों में त्वचा के कैंसर और मोतियाबिंद जैसे रोगों की महामारी फैलने की संभावना बन गई है। धरती पर पराबैंगनी किरणों की अधिकता सृष्टि के विनाश का कारण बन सकती हैं। ओजोन गैस को नुक्सान पहुंचाने वाले क्लोरोफ्लोरो कार्बन या सीएफसी रसायनों का इस्तेमाल फ्रिज वातानुकूलन यंत्रों और स्प्रे आदि बनाने के लिए किया जाता है कुछ अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के जरिए सीएफसी के इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं, परंतु चंद राजनीतिक और आर्थिक कारणों से अभी तक अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए हैं। वैसे हाल में जारी एक रिपोर्ट बताती है कि ओजोन की कुछ भरपाई हुई है।



जिस मानव समुदाय ने इन पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है। उसी के पास इससे छुटकारा दिलाने की कुंजी भी हैं, परंतु इसके संपूर्ण मानव जाति को देशों की सीमाएं तोड़कर एक जुट होकर गंभीर प्रयास करने होंगे। इसलिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक समझौते, संधियों, कार्य योजनाओं, और अभियानों के जरिए बिगड़े पर्यावरण को सुधारने का बीड़ा उठाया गया है। इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संधी सन् 1997 में जापान के शहर क्योटो में हुई। यह क्योटो प्रोटोकाल के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। इसका मुख्य कार्य क्षेत्र धरती को ग्रीनहाउस प्रभाव से मुक्ती दिलाकर विनाशकारी जलवायु परिवर्तन से बचाना है। इससे पूर्व सन् 1987 में अंतरराष्ट्रीय मांट्रियल प्रोटोकाल के जरिए धरती के वायुमंडल में ओजोन गैस की कमी पर अंकुश लगाने की मुहिम भी छेड़ी गई। इस संधि पर अब तक 165 देशों के हस्ताक्षर हो चुके हैं। इन संधियों की तमाम शर्तों को लागू करने में सबसे बड़ी समस्या धन की महसूस की गई। विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए धन की समस्या एक बड़ी बाधा के रूप में ऊभरी। इस दिक्कत को दूर करने के लिए कोई छह: वर्ष पूर्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'जैफ' नामक पर्यावरणीय सुविधा का गठन किया गया। दुनियां के 164 देश इसके सदस्य हैं। जैफ ने पर्यावरण सुधार के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है, परंतु बेहतर प्रदर्शन के लिए इसे आवश्यकता के अनुरूप धन उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। प्रसन्नता की बात है कि जैफ की पहली आम सभा अप्रैल 1998 में नई दिल्ली में सम्पन्न हुई है। इसमें सभी सदस्य देशों ने 21 वीं सदी में पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित और टिकाउ विकास के लिए सांझा कारगर अभियान चलाने का संकल्प लिया।

जहां विचारों में अपना आग्रह होने लगता है,
वहां जागती जड़ता और धर्म सोने लगता है।

संप्रदायों को कब रूप में देख स्वयं आंखों से,
सौ-सौ आंसू लिए सत्य सचमुच रोने लगता है।

○ आचार्य रूपचंद्र



जहां की तहां

○ साध्वी समताश्री

एक मछुआरा था। वह समुद्र के पास एक झोपड़ी में रहता था। उसकी छोटी सी टूटी फूटी झोपड़ी गर्मी में तपती और वर्षा में टपकती थी। घर में एक टूटी खाट और तथा चिमटा और चार मिट्टी के बर्तन थे।

मछुआरा समुद्र से मछलियां पकड़ता और उन्हें शहर में बेचता था। उससे जो कुछ प्राप्त होता उससे दोनों पति-पत्नी अपना गुजारा करते थे।

एक दिन मछुआरा सुबह से शाम तक समुद्र में जाल फेंकता रहा लेकिन कोई मछली उसमें नहीं आई। अंत में जब उसने जाल फैंका तो उसमें एक छोटी-सी सुनहरी मछली फंस गई। उस मछली को देखकर मछुआरा दंग रह गया। आज तक कभी उसने ऐसी मछली नहीं देखी थी। मछुआरे का अनायास ही उस सुनहरी मछली पर स्नेह उमड़ आया। उसने कहा—मैं इस मछली को नहीं बेचूंगा और नहीं खाऊंगा। और उसने उस मछली को फिर से समुद्र में फैंक दिया। सुनहरी मछली मनुष्य की आवाज में बोली मछुआरे आज तुमने मुझे जीवन दान दिया है। उसके बदले मैं तुम्हें वचन देती हूँ कि अगर तुम्हें किसी भी चीज की जरूरत हो तो मुझसे मांग लेना मैं तुम्हारी सहायता करूंगी।

पति को खाली हाथ देखकर पत्नी ने कहा क्या आज भी खाली हाथ आये हो। क्या जाल में कोई मछली नहीं फंसी। मछुआरे ने कहा—मछली तो फंसी थी। लेकिन वह इतनी सुंदरी और दिव्य थी कि मैं उसे मारने के लिए नहीं ला सका। मेरे मन में उसके प्रति स्नेह जागृत हो गया था। उस स्नेह के बदले मछली रानी ने मुझे जो कुद भी चाहिये वह मांगने का वरदान दिया है।

पति की बात सुनकर पत्नी उबल पड़ी। उसने कहा—मैं तो चार दिन से भूखी मर रही हूँ। और तुम मछलियों पर दया कर रहे हो। तुम्हें मेरे पर दया नहीं आती। अभी जाओ और उस सुनहरी मछली से एक छोटा सा घर जो धन धान्य से भरा हो मांग कर लाओ। वरना आज सोने नहीं दूंगी।

दिन भर से थका हारा चार दिन का भूखा मछुआरा पत्नी के कहने पर समुद्र के किनारे जा पहुंचा। काली अमवश्या की रात थी। हाथ हो हाथ भी नजर नहीं आ रहा था। उसने आवाज लगाई ओ सुनहरी मछली रानी जरा बाहर आओ मछली बाहर आई। उसने कहा—तुम्हें क्या चाहिए मछुआरे भाई।

मछुआरे ने कहा—मछली रानी मेरी पत्नी अबगरीबी से तंग आ चुकी है। वह एक छोटा सा धन धान्य से भरा घर चाहती है।

मछली रानी ने कहा—जाओ तुम्हारी पत्नी की इच्छा पूरी हो जायेगी। मछुआरा जब घर आया तो देखा झोपड़ी की जगह घर बना था। उसकी पत्नी अच्छे वस्त पहने बैठी थी। थाली में गरम-गरम भोजन परोसा पड़ा था। यह सब देखकर मछुआर हैरान रह गया। पत्नी ने कहा—ऐसे क्या देख रहे हो? क्या तुम्हें यह सब अच्छा नहीं लग रहा है। मछुआरे ने कहा—हां यह सब मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब बाकी जिंदगी आराम से गुजरेंगे। दो-चार दिन आराम से बीते थे कि एक दिन पत्नी ने कहा—जाओ मछली रानी से एक बहुत बड़ा घर और उसके अनुरूप सुख सुविधा मांग कर लाओ। मैं सेठानी बनकर शेष जिंदगी गुजारूंगी। मछुआरे ने कहा नहीं हमें और अधिक लालच नहीं करना चाहिए। जो मिला है उसमें संतोष से रहना चाहिए। लेकिन पत्नी नहीं मानी। बेचारा मछुआरा बिना मन समुद्रे के किनारे गया। वहां जाकर उसने मछली रानी को आवाज लगाई। तुरंत मछली रानी हाजिर हो गई। मछुआरे ने पत्नी की जिदद उसके सामने रख दी। मछली रानी ने कहा—जाओ उसकी यह इच्छा भी पूरी हो जायेगी। मछुआरा घर पहुंचा तो देखता है एक विशाल भवन जिसमें सब सुख सुविधा के साधन हैं। और उसकी पत्नी सजी-धजी पीढ़े पर जचकर बैठी नौकरों पर सौब झाड़ रही है जैसे ही मछुआरा घर पहुंचा उसकी पत्नी ने उससे कहा देखो—आज मेरा कहना माना तो आज कितनी मौज हो गई। लेकिन अभी मेरी एक इच्छा और है अब मैं सेठानी नहीं महारानी बनना चाहती हूँ। तुम कल जाकर मछली रानी से यह वरदान लेकर आओ।

मछुआरे ने कहा—देखो अब ज्यादा लालच मत करो तुम्हारे अब कोई कमी तो है नहीं। लेकिन पत्नी नहीं मानी। हठ करके बैठ गई। दुखी होकर मछुआरा दूसरे दिन फिर समुद्र के किनारे गया। वहां बैठा-बैठा सोचता है कि मैंने पत्नी से मछली की कही बात बताई ही क्यों। अब न जाने यह क्या-क्या और मांग करेगी? और उसने आवाज दी ओ सुनहरी मछली। मछली बाहर आई और बोली बोला अब तुम्हारी पत्नी को क्या चाहिए। बेचारे मछुआरे ने दुखी मन से सारी बात मछली को बता दी। मछली रानी ने कहा—देखो लालच की भी हद होती है। तुम्हारी पत्नी उस झोपड़ी में ही रहने लायक है। तुम जाओ और आज के बाद कभी मांगने मत आना इतना कहकर मछली रानी समुद्र में डूब गई। अचानक

समुद्र में गहरा तूफान आया। बारिश शुरू हो गई। मछुआरा भीगता भागता दुबारा घर लौटा तो उसने देखा कि महल दुबारा से झोपड़ी बन गई है। और वह अपने भाग को कोसता हुआ मछुआरा पुनःउसी झोपड़ी में आ गया और जाल उठाकर समुद्र की तरफ चल पड़ा।

मुक्तक-कविताएं

1.

खुशियों की तरह दर्द से गले मिले होते,
जिन्दगी को कुछ और ही सिलसिले मिले होते।
साथ तो निभ ही जाता कमायत तक आराम से,
प्यार के साथ-साथ कुछ फासले मिले होते।

2.

जब से खुद का खुद से साक्षात्कार हो गया,
तब से हमको अपने से ही प्यार हो गया।

लहरों से लड़ने वाला संसार हो गया,
जिसने समझा लहरों को वह पार हो गया।

खींच दिए हैं एक ओर भारी परदों को,
सभी ओर अब खुला-खुला विस्तार हो गया।

3.

महावीर थे कमल किंतु हम कीचड़ निकले
चैतन्य-पुरुष वे लेकिन हम तो मृत-जड़ निकले,

सदा दुहाई दी है सत्य अहिंसा की,
पर महावीर थे शेर और हम गीदड़ निकले।

○ अचार्य रूपचंद्र

ब्रह्मचर्य व्रत

○ महात्मा गांधी

हमारे व्रतों में तीसरा व्रत ब्रह्मचर्य है। हकीकत तो यह है कि दूसरे सब व्रत एक सत्य के व्रत में से ही उत्पन्न होते हैं और उसी के लिये रहे हैं। जो मनुष्य सत्य का प्रण किये हुए है, उसी की उपासना करता है, वह यदि किसी भी दूसरी चीज की आराधना करता है तो व्यभिचारी ठहरता है। तो फिर विकार की आराधना क्योंकर की जा सकती है ? जिसकी सारी प्रवृत्ति एक सत्य के दर्शन के लिये है वह संतान पैदा करने या गृहस्थी चलाने के काम में क्यों कर पड़ सकता है ? भोगविलास द्वारा किसी को सत्य की प्राप्ति हुई हो—ऐसी एक भी मिसाल हमारे पास नहीं।

अहिंसा के पालन को लें तो उसका संपूर्ण पालन भी—ब्रह्मचर्य के बिना अशक्य है। अहिंसा के मायने हैं सर्वव्यापी प्रेम। पुरुष के एक स्त्री को या स्त्री के पुरुष को अपना प्रेम अर्पण कर चुकने पर उसके पास दूसरे के लिए क्या रहा ? इसका तो यही मतलब हुआ कि हम दो पहले और दूसरे सब पीछे, पतिव्रता स्त्री पुरुष के लिए और पत्नी पुरुष स्त्री के लिए सर्वस्व होम से तैयार होगा, यानी इससे यह जाहिर है कि उससे सर्वव्यापी प्रेम का पालन हो ही नहीं सकता। वह सारी सृष्टि को अपना कुटुम्ब कभी बना ही नहीं सकता क्योंकि उसके पास उसका अपना माना हुआ कुटुम्ब है या तैयार हो रहा है। जितनी उसमें वृद्धि होगी, सर्वव्यापी प्रेम में उतनी ही बाधा पड़ेगी। हम देखते हैं कि सारे जगत् में यही हो रहा है। इसलिये अहिंसा—व्रत का पालन करनेवाला विवाह कर नहीं सकता, विवाह के बाहर के विकार की तो बात ही क्या?

तो फिर जो विवाह कर चुके हैं उनका क्या हो ? उन्हें सत्य किसी दिन नहीं मिलेगा ? वे कभी सब कुछ अर्पण नहीं कर सकेंगे ? हमने इसका रास्ता निकाला ही है। विवाहिते अविवाहित सा बन जाए। इस दिशा में इस सा सुंदर अनुभव और कोई मैंने किया नहीं। इस स्थिति का स्वाद जिसने चखा है, वह इसकी गवाही दे सकता है। आज तो इस प्रयोग की सफलता सिद्ध हुई कही जा सकती हैं। संसार भर की सारी स्त्रियां बहने हैं, माताएं हैं, लड़कियां हैं, यह विचार ही मनुष्य को एकदम ऊंचा उठाने वाला है, बंधन से मुक्त करने वाला है। इससे

पति—पत्नी कुछ खोते नहीं उलटे अपनी पूंजी बढ़ाते हैं। कुटुम्ब—वृद्धि करते हैं। विकाररूपी मेल को दूर करने से प्रेम भी बढ़ता है, विकार नष्ट होने से एक दूसरे की सेवा भी अधिक अच्छी हो सकती है। एक दूसरे के कलह के अवसर कम होते हैं। जहां प्रेम स्वार्थी और एकांगी है, वहां कलह की गुंजाइश ज्यादा है। एक मुख्य बात का विचार करने के बाद और इसके हृदय में ठंस जाने पर ब्रह्मचर्य से होने वाले शारीरिक लाभ, वीर्य—लाभ, आदि बहुत गौण हो जाते हैं। जानबूझकर भोग विलास के लिये वीर्य हानि करना और शरीर को निचोड़ना कैसी मूर्खता है ? वीर्य का उपयोग तो दोनों की शारीरिक, मानसिक शक्ति को बढ़ाने में है। विषय योग में उसका उपयोग करना उसका अति दुरुपयोग है और इस कारण वह कई रोगों का मूल बन जाता है।

ब्रह्मचर्य का पालन मन, वचन और कर्म से होना चाहिए। हर व्रत के लिये ही ठीक है। हमने गीता में पढ़ा है कि जो शरीर को काबू में रखता हुआ जान पड़ता है, पर मन से विकार का पोषण किया करता है, वह मूढ़ मिथ्याचारी है। सब किसी को इसका अनुभव होता है। मन को विकारपूर्ण रहने देकर शरीर को दबाने की कोशिश करना हानिकारक है। जहां मन है, वहां अन्ततः शरीर को भी घसीटे बिना नहीं रहता। यहां एक भेद समझ लेना जरूरी है। मन को विकारवश होने देना एक बात है और मन का अपने आप अनिच्छा से बलात् विकार को प्राप्त होना या होते रहना, दूसरी बात है। इस विकार में यदि हम सहायक न बनें तो आखिर जीत हमारी ही है। हम प्रति पल यह अनुभव करते हैं कि शरीर तो काबू में रहता है, पर मन नहीं रहता। इसलिये शरीर को तुरंत वश में करके मन को वश में करने की रोज कोशिश करने से हम अपने कर्तव्य का पालन करते हैं—कर चुकते हैं।

यदि हम मन के अधीन हो जाएं तो शरीर और मन में विरोध खड़ा हो जाता है, मिथ्याचार आरंभ हो जाता है। पर कह सकते हैं कि जब तक मनोविकार को दबाते ही रहते हैं तब तक दोनों साथ—साथ चलते हैं। इस ब्रह्मचर्य का पालन बहुत कठिन लगभग अशक्य ही माना गया है। इसके कारण का पता लगाने से मालूम होता है कि ब्रह्मचर्य का संकुचित अर्थ किया गया है। जननेन्द्रिय विकार के निरोध को ही ब्रह्मचर्य का पालन माना गया है। मेरी राय में यह अधुरी और छोटी व्याख्या है। विषयमात्र का निरोध ही ब्रह्मचर्य है। जो और—और इन्द्रियों

को जहां—तहां भटकने देकर केवल एक ही इन्द्रिय को रोकने का प्रयत्न करता है, वह निष्फल प्रयत्न करता है, आंख से विकार उत्पन्न करने वाली वस्तु देखना जीभ से विकारोत्तेजक वस्तु चखना, हाथ से विकारों को भड़काने वाली वाली चीज को छूना और साथ ही जननेन्द्रिय को रोकने का निश्चय करे उसे पहले ही से प्रत्येक इन्द्रिय को उस—उस इन्द्रिय के विकारों से रोकने का निश्चय कर ही लिया होना चाहिये। ब्रह्मचर्य के मूल अर्थ को सब याद रखें।

जैसी करनी वैसी भरनी

एक बुढ़िया अत्यंत कंजूस थी। उसके यहां एक संन्यासी भिक्षार्थी रोज आता। बुढ़िया एक चुटकी आटा भी उसे नहीं देती।

संन्यासी फिर भी आता रहता।

बुढ़िया ने तंग आकर सोचा, अब इस बाबे का तो नाम ही मिटाना होगा। यह सोचकर उसने चार जहर-मिश्रित लड्डू तैयार किये और बाबे को भिक्षा में दे दिये।

संन्यासी ने साश्चर्यभाव से लड्डू लिए और फिर खालूंगा इसी भावना से ले जाकर रख दिये।

रात के समय बुढ़िया के चार पुत्र विदेश यात्रा से लौटे। रात्रि अधिक व्यतीत हो जाने से उन्होंने घर न जाकर संन्यासी की कुटिया में ही रहने का निर्णय लिया।

चारों भूखे थे। उन्होंने संन्यासी से खाना मांगा। संन्यासी ने बहुत प्रसन्नता से चारों लड्डू उन्हें दे दिये।

चारों खाकर सो गये, परंतु सोकर वे उठे ही नहीं। संन्यासी ने चारों के विषय में पूरी-पूरी जानकारी करके सोचा, कि जो जैसा करता है उसे कर्मानुसार वैसा ही फल मिलता है।

तनाव हर स्थिति में हानिकारक हैं

○ प्रस्तुति-सोहनवीर

यह तथ्य न केवल सर्वविदित है वरन प्रत्येक का अनुभव भी है कि आज का जीवन व्यस्त और तनावपूर्ण है। युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, व्यवसायी और नौकरी पेशा, गरीब और अमीर हर वर्ग तथा हर स्तर का व्यक्ति तनावग्रस्त है। यों तनाव का सामान्य अर्थ मानसिक तनाव से लिया जाता है, पर वस्तुतः तनाव तीन प्रकार के होते हैं—शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव।

लंबे समय तक लगातार एक ही प्रकार का काम करने और अत्यधिक श्रम करने के कारण जो थकान उत्पन्न होती है उसे शारीरिक तनाव कहा जाता है।

मानसिक तनाव बहुत अधिक सोचन—विचारने या चिंता करने से उत्पन्न होता है। एक घंटे बाद परीक्षाफल घोषित होने वाला है तो दिल की धड़कन बहुत बढ़ गई। दूर कहीं प्रवास पर हैं। रात में किसी की सहसा याद आ गई तो नींद गायब, यही है भावनात्मक तनाव।

लाइफ एक्सटेंशन फाउंडेशन नामक संस्था के संचालकों ने पता लगाया है कि व्यक्तियों में निराशा असफलता, हार की भावना, निर्णय करने में दुविधा की स्थिति एवं चिंता आदि तनाव को जन्म देती है। न्यूयार्क के एक हृदय रोग विशेषज्ञ ने बताया कि दूसरों पर दोषारोपण करने वाले, अत्यधिक भावुक एवं जल्दबाजी करने वाले लोग तनाव के शिकार होते हैं।

सामान्यतः घरों में तनाव का कारण पति—पत्नी का आपसी तालमेल न बैठ पाना होता है। पत्नियों पतियों को उकसाती व उत्तेजित करती हैं और पति पत्नियों को रसोई आदि के लिए तंग करते हैं। परस्पर संतुलन न बैठ पाने से दोनों तनाव से ग्रसित हो जाते हैं। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि माता—पिता के बीच अनवन व कलह देखकर बच्चे भी तनाव से आक्रांत हो जाते हैं। फलतः पूरा घर ही नरक बन जाता है। इस नरक से त्राण पाने का रास्ता एक ही है कि परस्पर सामंजस्य बैठाया जाए। प्रेम आत्मीयता, सद्भावना, सहयोग आदि से वही परिवार स्वर्गीय आनंद का उपवन बन सकता है जो जरा से मतभेद एवं नाससझी के कारण नरक बन गया था।

वर्तमान समय में 50 प्रतिशत से अधिक रोगी तनाव की प्रतिक्रिया स्वरूप रोगग्रस्त पाए गए हैं। चिकित्सकों एवं मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि लगातार सिरदर्द, चक्कर आना, आंखों में सुखी आना, काम में मन न लगना और लकवा आदि जैसे रोगों का आक्रमण हो जाना ये सभी अत्यधिक तनाव के ही दुष्परिणाम



हैं। ऐसे लोग प्रायः रोगों की उत्पत्ति के लिए कभी मौसम को, कभी आहार को, कभी दूसरों को दोष देते हैं। अधिक तनाव शरीर व मन दोनों के लिए हानिकारक है।

स्नायुविक तनाव विशेषज्ञ डा. एडमंडे जैकवसन का कहना है कि हृदय रोग, रक्तचाप की अधिकता, अल्सर, कोलाइटिस आदि सामान्यतः दिखाई देने वाले रोग प्रकारांतर से तनाव के ही कारण उत्पन्न होते हैं। स्नायु दौर्बल्य, अनिद्रा, चिंता, खिन्नता आदि अनेक रोग तनाव के फलस्वरूप होते हैं।

मनोवैज्ञानिक भी यही कहते हैं कि हृदय रोग का कारण अज्ञात भय, चिंता है, जो अंतर्मन में व्याप्त हो जाती है। नतीजा यह होता है कि मनुष्य की स्वाभाविक खुशी व प्रफुल्लता छिन जाती है।

इससे रक्तवाहिनी नसें थक जाती हैं। कभी फट भी जाती हैं। फलतः मस्तिष्क में लकवा भी हो जाता है और शक्कर देने वाली क्लोग ग्रथियां भी खाली हो जाती हैं और क्लोम रस मिलना बंद हो जाता है। यह ग्रंथि प्रसन्नता के अभाव में कार्य करना बंद कर देती है और क्लोम रस देना भी बंद कर देती है। क्लोम रस न मिलने से शर्करा स्वतंत्र हो जाती है और मूत्र के साथ बहने लगती है। इसी को मधुमेह कहते हैं। मधुमेह रोग, पछताने, शोक करने से भी हो जाता है।

कैरालीन वीड थाम्स ने 1946 से 1964 तक 18 वर्षों में इस संदर्भ में किए गए प्रयोगों से निष्कर्ष निकाला है कि जो लोग चिंता, क्रोध, भय और तनाव से ग्रस्त रहते हैं एवं जीवन में भावनाओं एवं वासनाओं की संतुष्टि नहीं कर पाते, अधिकांश वे ही लोग कैंसर रोग से ग्रस्त होते देखे गए हैं।

तनाव से मुक्त रहने के लिए सुक्ष्मदर्शियों ने यही कहा है कि अपनी क्षमता पर अच्छे से अच्छा काम करें। इसमें बाहरी सहायता या मार्गदर्शन कुछ विशेष कारणर सिद्ध नहीं होता। अपने द्वारा उत्पन्न किए तनाव को कोई दूसरा दूर कैसे कर सकता है? तनाव को व्यक्ति स्वयं ही नियंत्रित एवं दूर कर सकता है। दूसरों का मार्गदर्शन थोड़ा बहुत उपयोगी हो सकता है। स्वाध्याय के द्वारा सहज ही पता चल जाता है कि निरर्थक एवं महत्वहीन बातों को अधिक तूल दे दिया गया और अकारण ही तनाव को आमंत्रित कर लिया गया। वस्तुतः यह झाड़ी के भूत की कल्पना मात्र थी।

अपने को तनावग्रस्त न होने देने के लिए दृढ़ निश्चय, लगन एवं सतत् निष्ठापूर्वक सद्कार्यों में नियोजित किए रहना ही सर्वोत्तम उपाय है। सदा सहनशीलता से काम लिया जाए, भविष्य में भयभीत न हुआ जाए।



अब सपनों को भी रिवाइंड किया जा सकेगा!

○ पस्तुति-योगाचार्य सुनीत कुमार झा

पुरानों और उपनिषदों में युगों पहले कल्पित अलौकिक चेतना का स्वरूप जल्द ही साकार होने वाला है जब यह कोरी कल्पना नहीं रह जाएगी कि हजारों मील दूर बैठे दो व्यक्ति शरीर के बजाय चेतना के स्तर पर बात कर सकेंगे, गुजरा वक्त लौटा सकेंगे और भौतिक स्तर पर चीजें बदल सकेंगे।

21 वीं सदी का नया चमत्कार समझे जाने वाले आधे मानव और आधी मशीन यानी साइबोर्ग कहे जाने वाले ब्रिटेन के प्रो. केविन वारविक ने इनमें से बहुत सी चीजों को संभव कर दिखाया है। इस वर्ष मार्च में अपने बाएं हाथ की कलाई में एक लघु कम्प्यूटर लगवाकर दुनिया के पहले साइबोर्ग बने प्रो. वारविक का मानना है कि आने वाले दिनों में वह न केवल सामने बैठे व्यक्ति के दिमाग में चल रही उथल पुथल को समझने में कामयाब हो जाएंगे बल्कि अपने सपनों को भी किसी बीडियो कैसेट की तरह रिवाइंड करके उसे फिर से देख सकेंगे।

16 अक्टूबर को अपनी पुस्तक आई साइबोर्ग के विमोचन के लिए हिंदुस्तान आ रहे प्रो.वारविक का मानना है कि आने वाले दिनों में इंसान के केवल सोचने भर की जरूरत होगी और जिंदगी से जुड़े तमाम काम न केवल पलक झपकते हो जाएंगे बल्कि दो इंसान बिना एक दूसरे से बोले, मीलों दूर बैठे होने के बावजूद भी एक दूसरे के मन की बात समझ सकेंगे।

वह कहते हैं कि 'मैं' आधा मानव और आधी मशीन हूँ, मेरा स्नायुतंत्र इंटरनेट से जुड़ा हुआ है और इसीलिए मैं न्यूयार्क में होते हुए चार हजार किलोमीटर दूर ब्रिटेन में इंटरनेट के माध्यम से अपनी रोबोट बाजू से मनचाहे काम करवा सकता हूँ। ब्रिटेन की रीडिंग यूनिवर्सिटी में साइबरनेटिक के प्रोफेसर ने 1998 में अपनी बाजू में सिलिकान चिप लगवाकर पूरे विज्ञान जगत को सकते में डाल दिया था लेकिन आज पूरी दुनिया उन्हें काफी गंभीरता से ले रही है। वारविक साइबोर्ग बनने के बाद अपने सबसे शानदार अनुभव के बारे में बताते हैं 'आंखों पर पट्टी बंधी होने के बावजूद अपनी छठी इंद्रिय की सहायता से मुझ चीजों को ढूँढने में

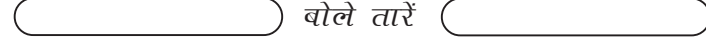


कतई परेशानी नहीं हुई।” उन्हें इस बात की पूरी उम्मीद है कि आने वाले कुछ दिनों में साइबोर्ग को केवल सोचने की जरूरत होगी और कार न केवल अने आप चलेगी, बल्कि आपके सोचते ही इच्छित दिशा में भी मुड़ जाएगी। वारविक अगले 10-12साल में अपने शरीर पर कुछ और प्रयोग करने जा रहे हैं जिसके चलते दिमाग को नियंत्रित किया जा सकेगा और वे सामने बैठे व्यक्ति के विचारों को भी जानने में सक्षम हो सकेंगे। 1998 में सिलिकान चिप लगवाने से पूर्व उन्हें आशांका थी कि यदि उनका यह अभियान विफल रहा तो वे अपना बायां हाथ गवां बैठेंगे या उनका मानसिक संतुलन हमेशा के लिए गड़बड़ा जाएगा। लेकिन इसके बावजूद किसी दूसरे को बलि का बकरा बनाने के बजाय उन्होंने खुद ही यह खतरा मोल लेने का फैसला किया था।

अभी वारवित के विचारों पर यकीन करना थोड़ा मुश्किल जरूर लगता है लेकिन उम्मीद की जानी चाहिए कि निकट भविष्य में लोग वैचारिक स्तर पर ही एक-दूसरे से संपर्क कायम करेंगे और शब्द समाप्त हो जाएंगे। वेदों पुराणों और उपनिषदों में तो वैसे भी कहा ही गया है कि शरीर तो चेतना का वाहन मात्र है और प्रो. वारविक द्वारा की गई शुरुआत इसी अंतिम सत्य की ओर पहुंचने का प्रयास हो सकती है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि इसी रफतार से आगे बढ़ते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब इंसान नामों के बजाय अपनी सिलिकान चिपों में सूचीबद्ध नंबरों के जरिये जाने जाएंगे। प्रो. वारविक अपनी सफलता से काफी खुश हैं। उनका मानना है कि यह केवल एक वैज्ञानिक चमत्कार या अजूबा भर नहीं है बल्कि इससे मानवता का भी काफी फायदा हो सकता है। शुरु में उन्होंने मेरुदंड संबंधी बीमारियों, स्नायुतंत्र में गड़बड़ी के शिकार मरीजों तथा नेत्रहीन लोगों की परेशानियों को दूर करने के उद्देश्य से अपने शरीर पर यह प्रयोग किए थे।

मानव और मशीन के इस संबंध के विषय में उनका कहना है “मानव के विपरीत साइबोर्ग तीन के बजाय सैंकड़ों दिशाओं में सोच कहता है तथा पांच इंद्रियों के बजाय बहुइंद्रिय हो सकता है।” वैज्ञानिकों का कहना है कि विज्ञान की प्रगति के चलते वह दिन दूर नहीं जब आर्थिक रूप से बेहद कमजोर लोग ही वास्तविक मानव होंगे।



मासिक राशि भविष्यफल-अक्टूबर 2006

डॉ. एन. पी. मित्रल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का तृतीय सप्ताह छोड़कर शेष समय संतोष जनक है। शत्रु सिर उठाएंगे पर वो अपने मनसूबों में कामयाब नहीं होंगे। इस माह कुछ जातकों का विचार अपने पुराने वाहन बेच कर नये वाहन खरीदने का बनेगा। कोई छोटी बड़ी लाभदायक यात्रा हो सकती है कोई शुभ सूचना भी मिल सकती है। दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य बनाए रखें। किसी वाद-विवाद में अकारण ही न उलझें। समाज में यश, मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभ तो होगा किन्तु अति सर्वथा अहित कर है। नई योजनाएं बनेंगी दौड़ धूप भी काफी होगी किन्तु योजनाओं का क्रियान्वयन नहीं हो पाएगा। मानसिक चिंता बनी रहेगी। कुछ जातकों को सवारी का लाभ मिल सकता है। कुछ जातकों को मुकदमें में चिजय मिल सकती है। कार्य की पूर्णता में अवरोध आए तो संयम से काम लेना हितकर है। समाज में मान-प्रतिष्ठा सामंजस्य रूप से बनी रहेगी।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य फल दायक है, हां कुछ जातकों का रूका हुआ पैसा मिल सकता है। कुछ लोग अधिकारी वर्ग से तंग रहेंगे। रुपये का नया लेन-देन न करें। मानसिक चिंता को अपने उपर हावी न होने दें। शत्रुओं की परवाह न करें। अपने मित्रों की मदद से आप उन पर काबू पा लेंगे। जीवन साथी के स्वास्थ्य की ओर ध्यान दें। वैसे दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य बना रहेगा। समाज में मान इज्जत सामान्तया बनी रहेगी।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अनुकूल फल देने वाला है। इस माह किसी नये काम में पैसा न लागाएं। कुछ जातकों को मुकदमें में सफलता मिल सकती है तथा कुछ का राजनीति में कद उंचा हो सकता है। कुद को मानसिक चिंता हो सकती है

जिसका कारण किसी अप्रिय समाचार का मिलना रहेगा। उत्तरार्ध में यात्राएं लाभदायक रहेंगी। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाए रखना ही श्रेयास्कर रहेगा। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। खर्चा अधिक होगा। कार्य में प्रतिस्पर्धा रहेगी पर आप प्रतिद्वन्दियों पर भारी पड़ेंगे। योजना के क्रियान्वयन का समय है। दिल लगाकर कार्य करें। अनजान व्यक्तियों से मुलाकात उनके बारे में पूरी तसल्ली कर के ही करें। किसी अन्य के वाद-विवाद में न पड़ें। लेन देन के मामले में किसी पर आंख मूंद कर विश्वास न करें। जीवन साथी के सेहत का ख्याल रखें।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर अनुकूल फल देने वाला ही कहा जायेगा। शत्रु सिर उठाएंगे पर आप उन पर काबू पा लेंगे। अपने गुस्से पर काबू रखें। आपको अपने परिश्रम का फल मिलेगा। अपने सहयोगियों पर आप विश्वास कर सकते हैं। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी। वाहन सावधानी से चलाएं। दाम्पत्य जीवन में खरास न आने दें, अहित कर है। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में सामान्यतौर पर मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम तथा अवरोधों के चलते धन लाभ कराने वाला है। धर्म के सहारे अवरोधों से मुक्ति मिलेगी। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे लाभ मिलेगा। वाहन सावधानी से चलाएं। परिवार में शांति बनी रहेगी। किसी प्रकार की गतलफहमी दाम्पत्य जीवन में न पनपने दें। मुकदमे का फैसला हक में होने की उम्मीद है। कुछ खर्चा ज्यादा हो सकता है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रमसाध्य लाभ देने वाला है किन्तु परिवार या समाज में किसी आलोचना का शिकार हो सकते हैं। किसी प्रभावशाली व्यक्ति के कारण हालात में सुधार आयेगा। शत्रु पक्ष परास्त होगा। अपने गुस्से और वाणी पर काबू रखें। विनम्रता

आपकी कामयाबी का मूल मंत्र है। नौकरी पेशा जातकों की पदोन्नति संभावित है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें तथा कुछ समय मनोरंजन के लिये निकालें।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते शुभ फल दाई है। किसी किसी जातक का कोई ऐसा काम बनेगा कि यह माह यादगार माह बन जाएगा। कुछ जातकों की पदोन्नति आदि भी उन्हें मानसिक चिंता से मुक्त करेगी। अतिथियों की आवाजाही से कुछ खर्चा अधिक हो सकता है। इस माह अनावश्यक रूप से कोई नया निवेश न करें। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा किन्तु बुजुर्गों के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समान में मान सम्मान बना रहेगा।

मकर-मकर राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभ तथा खर्च बराबर देने वाला प्रतीत होता है। प्रतिस्पर्धा के कारण मानसिक चिंता बनी रहेगी। योजनाओं का क्रियान्वयन किसी प्रभावशाली व्यक्ति या किसी स्वजन के माध्यम से होगा। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। बाहरी किसी वाद-विवाद में अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप न करें। मानहानि का डर है। शत्रु आपके खिलाफ होकर नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

कुंभ-कुंभ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अच्छे फल दे सकता है यदि बुद्धि तथा विवेक से कामलिया जाय। पूर्वार्ध शुभ फल दायक नहीं कहा जाएगा। उत्तरार्ध में कुछ जातकों का रूका हुआ पैसा मिल सकता है। पूर्वार्ध में स्वास्थ्य की चिंता रहेगी जो बाद में मिट जायेगी उत्तरार्ध में छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जो लाभ कारी रहेंगी। तीर्थ यात्रा की भी संभावना है। समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पुरुषार्थ के बल पर व्यापार की वृद्धि का संकेत देता है। आपकी तर्क बुद्धि काम आयेगी। कुछ जातकों को संतान का सुख होगा। दाम्पत्य जीवन की समस्याओं का समाधान धैर्य से करें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। वाहन सावधानी से चलाएं। समाज में यश, मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

इति शुभम्

राजधानी समाचार

परम पूज्य गुरुदेव महामहिम आचार्य श्री रूप चन्द्र जी महाराज परम पूज्य महान विदुषी संघ प्रवृत्तिनी साध्वी श्री मंजुला श्री जी महाराज, सरलमना साध्वी मंजु श्री जी महाराज, अपने धर्म परिवार के साथ मानव मंदिर केन्द्र दिल्ली में विराजमान हैं। धर्म की प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। मानव मंदिर केन्द्र द्वारा संचालित सभी सेवा कार्य प्रगति पर हैं। पूज्यवर के दशनार्थ भक्तजनों का आवागमन बराबर बना रहता है। पूज्य आचार्य श्री के परम पवित्र दर्शन प्राप्त कर सभी जन धन्य हो जाते हैं।

क्षमावणी पर्व पर गुरुदेव श्री का संदेश-

भोगल आश्रम भगवान नगर जैन समाज शुरु से ही परम पूज्य गुरुदेव से तहे दिल से जुड़ा हुआ है। मानव मंदिर केन्द्र के विकास में यहां के समाज का अच्छा योगदान रहा है। क्षमावणी के पर्व पर भोगल जैन समाज के प्रधान श्री रामकुमार जी जैन की विशेष प्रार्थना पर पूज्य गुरुदेव का भोगल मंदिर जी में पधारना हुआ इस पुण्य अवसर पर आपश्री ने फरमाया—'क्षमा वीरस्य भूषणं' क्षमा वीरों का आभूषण है। भगवान महावीर का प्रमुखसंदेश है। क्षमा वीर ही कर सकता है। कायर नहीं। यह पर्व हमें आपसी वैर भाव, वैमनस्य को मिटाकर क्षमा करना तथा क्षमामांगने का संदेश देता है। जब तक हम अंतरमन से किसी की भूलों का क्षमा नहीं करते हैं तथा अपनी भूलों पर क्षमा नहीं मांगते हैं तब तक यह पर्व पूर्ण नहीं माना जा सकता।

जन्मोत्सव महामहिम का

परम पूज्य गुरुदेव का वर्षों बाद इस अवसर पर आश्रम में विराजना हुआ है। 22 सितम्बर का दिन आपके जन्मोत्सव से पवित्र बन गया है। इस अवसर पर आश्रम वासियों ने एक छोटा सा आयोजन किया। छोटे से लेकर बड़ों तक सबसे, भजनों कविताओं, मंत्रों के माध्यमसे अपनी पवित्र भावनाओं को पूज्यवर के चरणों में रखा, जो नीचे प्रकाशित किये जा रहे हैं। देश, विदेश से भक्तजनों ने जन्मदिन की शुभकामनाओं को टेलीफोन के द्वारा प्रातः चार बजे से ही भेजना शुरु कर दिया था। दिन रात शुभकामनाएं देने का दौर चलता रहा पूज्य वरने सबकी भावनाओं को हृदय से स्वीकार किया आयोजन के अन्त में सबको गुरु प्रसाद मिला।

पूज्य गुरुदेव श्री रूपचन्द्र जी महाराज

के पावन जन्मोत्सव पर आप श्री के चरणारविन्दों में
हम अपनी पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।

''आप केवल आश्रम के दीप नहीं, दुनिया के दीपक हो।
आपसे आलोकित नगर हमारे, जब मानस आलोकित है।।
हम केवल शब्दों के द्वारा, क्या अभिनंदन कर सकते हैं।
बस श्रद्धा के पुष्पों द्वारा, भावांजलि अर्पण करते हैं।।''

आपकी अमृतवाणी सुनने के लिए भक्त गण दूर-दूर से चले आते हैं। जो एक बार आ जाता है वह आपका ही होकर रह जाता है। तथा अपने को धन्य समझने लगता है। वह मन ही मन सोचता है कि आज मैंने आपकी पावन ज्ञान गंगा में स्नान कर लिया है।

आपने तो भारत वर्ष के साथ-साथ समूचे विश्व में भी अपने ज्ञान का प्रकाश लहरा रखा है। सभी धर्मों का यात्री दल जहां भी जाता है वहां पर जैन धर्म के प्रतिनिधि के रूप में आचार्य श्री जी आपको आमंत्रित किया जाता है। इसके कई उदाहरण हैं जिनमें एक में आपको सब धर्म अवलांबियों के साथ जैन धर्म के प्रतिनिधि के रूप में आपको आमंत्रित किया गया था। आपने कैलाश पर्वत यात्रा में भगवान आदिनाथ की तपोभूमि और निर्वाण भूमि की भी पहचान करवाई।

वास्तव में आपका जीवन एक सूर्य के समान है जो स्वयं तपकर संसार को प्रकाश देता है। एक घने फलदार वृक्ष की तरह है जो निष्पक्ष रूप से सबको सुखद छाया प्रदान करता है व ज्ञान सबको फल के रूप में प्रदान करता है। तथा मिश्री की भांति सभी को मिठास अर्थात् हित का मार्ग प्रदान करता है।

आज की खुशी की इस मंगल वेला में हम अल्पज्ञ आप को क्या दे सकते हैं। यही प्रमोद भावना है कि आप दीर्घायु हो हमें आपका वरद हस्त तथा चरणों में स्थान ऐसे ही प्राप्त होता रहे।

''भरों की टोलियां झूमकर गाती है गुणगान तुम्हारा।
वृक्षों की डालियां झुक-झुक करती हैं सम्मान तुम्हारा।।
गिरि की उंची चोटी जैसा अनंत हृदय महान तुम्हारा।
सिंधु की गहराई सा गहरा है ज्ञान तुम्हारा।।

○ पवन रीटा जैन

जन्म दिन की बधाइयां

चन्द्र सूर्य करते सदा विश्व में प्रकाश
नित गुरुवर के ज्ञान की फैलती सदा सुवास

चिरंजीव रहो सदा संघ की करे संभाल
शांति की ज्योति जले आप हो दीन दयाल

जन्मदिन की शुभकामना सफल हुए अरमान
आप जैसे गुरुवर मिले साक्षात् रूप भगवान

जलधर भी नहीं रुक सका जन्मदिन पर आज
शांति पाने को आ गया अवलोकन योगी राज ।।

○ साध्वीश्री मंजुश्री

प्रभु मुखड़े ने देखया खिलै दिल री कली
कली कली नी मन री आस फली

पूनम चांद जिसयो आपरो ओ दीदार
देख देख चांद हर्षित होवे, सारे नर नार
मानो रोवतैं टाबर ने दे दी मिसरी री डली

आपरो दीदार और दिलडो विशाल
जो भी आया चरणां में वे हो गया निहाल
प्रभु री वाणी में जादू, मानों बांसुरी बनी ।

○ साध्वी चांदकुमारी



-सम्बत्सरी पर्व के शुभ अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए
आचार्यश्री रूप चंद्र जी महाराज ।



-गुरुदेव जी के प्रवचनों का आनन्द लेते हुए भक्तगण ।